अनुक्रमणिका

प्रथम अध्य्याय

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा 1-89

* **प्रस्तावना**

1.1 कहानी का अर्थ और परिभाषा

(1.1.1) हिन्दी कहानी के विद्वानों की परिभाषाएँ

(1.1.2) संस्कृत के आचार्यो का मत

(1.1.3) पाश्चात्य के विद्वानों की परिभाषाएँ

(1.1.4) मौलिक परिभाषाएँ

1.2 कहानी के तत्व

(1.2.1) कथावस्तु या कथानक

(1.2.2) पात्र और चरित्र-चित्रण

(1.2.3) संवाद या कथोपकथन

(1.2.4) देशकाल और वातावरण

(1.2.5) भाषा शैली

(1.2.6) उद्देश्य

1.3 कहानी के प्रकार या भेद

(1.3.1) विषयवस्तु के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण

(1.3.2) प्रतिपादन शैली के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण

(1.3.3) विषय के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण

(1.3.4) रचना लक्ष्य के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण

(1.3.5) स्वरूप विकास के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण

1.4 कहानी की महत्ता

1.5 भारतीय कहानी की परम्परा

1.6 प्रथम विकास काल-भारतेन्दु युग

1.7 द्रितीय विकास काल-प्रेमचंद्र युग

1.8 तृतीय विकास काल-प्रेमचंदोत्तर युग

1.9 चतुर्थ विकास काल-स्वातंत्र्योत्तर युग

1.10 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का परिप्रेक्ष्य और विभिन्न कहानी आन्दोलन

(1.10.1) नई कहानी

(1.10.2) समकालीन कहानी

(1.10.3) साठोतरी कहानी

(1.10.4) सचेतन कहानी

(1.10.5) अकहानी

(1.10.6) सहज कहानी

(1.10.7) समांतर कहानी

(1.10.8) जनवादी कहानी

(1.10.9) सक्रिय कहानी

1.11 विविध भाषाओं में कहानी

*** निष्कर्ष**

***संदर्भ ग्रंथ-सूची**

द्वितीय अध्याय

महीप सिंह का जीवन तथा साहित्य परिचय **90-117**

* **प्रस्तावना**

2.1 महीप सिंह का जन्म और मृत्यु

2.2 महीप सिंह की शिक्षा-दिक्षा

2.3 महीप सिंह का दाम्पत्य जीवन

2.4 महीप सिंह का रहन-सहन, आचार-विचार और व्यक्तिव

2.5 महीप सिंह की लेखन प्रेरणा व पहली रचना

2.6 महीप सिंह के जीवन को प्रभावित करनेवाली घटनाएँ

2.7 महीप सिंह का साहित्य एवं कृतित्व

2.8 महीप सिंह के विविध साहित्य

2.9 महीप सिंह को मिलने वाले सम्मान एवं पुरस्कार

2.10 महीप सिंह की विदेश यात्राएँ एवं अन्य कार्य

2.11 महीप सिंह की संचेतना सफर

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

तृतीय अध्याय

भारतीय साहित्य में नारी **118-229**

* **प्रस्तावना**

3.1 विभिन्न युगों में नारी की स्थिति

(3.1.1) प्राचीन काल या प्रागैतिहासिक काल में नारी

(3.1.2) वैदिक काल में नारी

(3.1.3) उत्तर वैदिक काल में नारी

(3.1.4) उपनिषद काल में नारी

(3.1.5) स्मृति काल में नारी

(3.1.6) रामायण एवं महाभारत काल में नारी

(3.1.7) पौराणिक काल में नारी

(3.1.8) बौद्ध काल में नारी

(3.1.9) राजपूत काल में नारी

(3.1.10) मध्यकाल में नारी

(3.1.11) आधुनिक काल या ब्रिटिश काल में नारी

(3.1.12) स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी

(3.1.13) संस्कृत साहित्य काल में नारी

3.2 भारतीय वर्तमान समाज में नारी का क्षेत्र

(3.2.1) आर्थिक क्षेत्र में नारी

(3.2.2) राजनीतिक क्षेत्र में नारी

(3.2.3) सामाजिक क्षेत्र में नारी,

(3.2.4) सांस्कृतिक क्षेत्र में नारी

(3.2.5) धार्मिक क्षेत्र में नारी

(3.2.6) शिक्षा के क्षेत्र में नारी

(3.2.7) कार्य क्षेत्र में नारी

(3.2.8) परिवार के क्षेत्र में नारी

(3.2.9) विवाह संस्था के क्षेत्र में नारी

(3.2.10) वैयक्तिक क्षेत्र में नारी

3.3 भारतीय परिवेश में नारी

(3.3.1) ग्रामीण परिवेश में नारी

(3.3.2) नगरीय परिवेश में नारी

3.4 नारी की अवधारणा

3.5 भारतीय समाज में साहित्य, जीवन और नारी

3.6 भारतीय हिन्दी साहित्य में नारी विषयक दृष्टिकोण

(3.6.1) हिन्दी साहित्य में पारंपरिक दृष्टिकोण से नारी

(3.6.2) हिन्दी साहित्य में आधुनिक दृष्टिकोण से नारी

3.7 हिन्दी कथा साहित्य में नारी

(3.7.1) हिन्दी काव्य साहित्य में नारी

(3.7.2) हिन्दी नाटक साहित्य में नारी

(3.7.3) हिन्दी उपन्यास साहित्य में नारी

(3.7.4) हिन्दी कहानी साहित्य में नारी

(3.7.5) अन्य हिन्दी साहित्य में नारी

(3.7.6) प्रवासी महिला कथाकारों के साहित्य में नारी

(3.7.7) महिला कथाकारों की दृष्टि में नारी

3.8 महीप सिंह की कहानियों में नारी के परिपेक्ष में उनके विचार

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

चतुर्थ अध्याय

महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण **230-306**

* **प्रस्तावना**

4.1 महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण

(4.1.1) - प्रथम खंड - "सुबह की महक"

(4.1.2) - द्वितीय खंड - **"क्षणों का संकट"**

(4.1.3) - तृतीय खंड - **"संबंधों का सन्नाटा"**

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

पंचम अध्याय

महीप सिंह की कहानियाँ में नारी की भूमिकाएँ 307-341

* **प्रस्तावना**

5.1 महीप सिंह की कहानियाँ में पति-पत्नी एवं तलाक़शुदा जीवन में नारी की भूमिका

5.2 महीप सिंह की कहानियाँ में मित्र एवं कामकाजी सहकर्मी संबंध में नारी की भूमिका

5.3 महीप सिंह की कहानियाँ में विवाहेतर संबंध में नारी की भूमिका

5.4 महीप सिंह की कहानियाँ में विवाह के पहले प्रेम संबंध में नारी की भूमिका

5.5 महीप सिंह की कहानियाँ में जटिल पात्रों में नारी की भूमिका

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

षष्टम अध्याय

हिन्दी कहानियों में चित्रित महानगरों की जीवनशैली 342-384

* **प्रस्तावना**

6.1 महानगर का स्वरूप और उसके प्रमुख कारण

(6.1.1) व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना

(6.1.2) शिक्षा का माध्यम

(6.1.3) रोज़गार की तलाश में स्थानान्तरण

(6.1.4) विदेशी संस्कृति का असर

(6.1.5) राजनीति एवं सरकारी कार्यालय का केन्द्र

(6.1.6) महानगरों की सुविधाओं का आकर्षण

(6.1.7) यातायात के साधनों का विकास

(6.1.8) औधोगीकरण

6.2 हिन्दी कहानी में नारी चित्रित महानगरीय जीवनशैली

(6.2.1) बेरोज़गारी और आर्थिक संकट

(6.2.2) निम्नस्तरीय जीवन शैली

(6.2.3) मूल्यों का विघटन

(6.2.4) आर्थिक एवं शारीरिक शोषण

(6.2.5) आवास की समस्या वाली जीवन शैली

(6.2.6) स्त्री-पुरुष के संबंधों में बदलाव

(6.2.7) तनाव, कुण्ठा एवं धुटन भरा जीवन

(6.2.8) एकाकीपन एवं अकेलापन की जीवन शैली

(6.2.9) संयुक्त परिवारों का विस्छेदन

(6.2.10) यांत्रिक जीवन शैली

6.3 महीप सिंह की कहानियों में नारी की महानगरीय जीवन शैली

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

सप्तम अध्याय

महीप सिंह की कहानियों में शिल्प-विधान की विशेषताएँ 385-431

* **प्रस्तावना**

7.1 महीप सिंह की कहानियों में शिल्प-विधान की विशेषताएँ

(7.1.1) महीप सिंह की कहानियों में कथानक

(7.1.2) महीप सिंह की कहानियों में पात्र-चरित्र चित्रण

(7.1.3) महीप सिंह की कहानियों में कथनोपकथन या संवाद

(7.1.4) महीप सिंह की कहानियों में देशकाल या वातावरण

(7.1.5) महीप सिंह की कहानियों में भाषा-पक्ष

(7.1.6) महीप सिंह की कहानियों में शैली-तत्व

(7.1.7) महीप सिंह की कहानियों में उद्देश्य

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

* **उपसंहार** **432-444**

* **परिशिष्ट** **445-458**